eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

# मुग़ल स्थापत्य कलाः ताजमहल से लाल किला

**डा0 मुक्ता सिंह[1]**
[1]एसोसिएट प्रोफेसर इतिहास, मध्यांचल प्राफेशनल विश्वविद्यालय, भोपाल म0प्र0

Received: 20 July 2025, Accepted: 25 July 2025, Published with Peer Reviewed on line: 31 July 2025

## Abstract

यह शोधपत्र मुग़ल कालीन स्थापत्य परंपरा के दो सबसे प्रतिष्ठित और प्रतीकात्मक स्मारकों ताजमहल और लाल किला के माध्यम से उस युग की वास्तुकला की सूक्ष्मता, तकनीकी दक्षता, सौंदर्य दृष्टि और सांस्कृतिक बहुलता का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। ताजमहल को प्रेम एवं सौंदर्य की मूर्त अभिव्यक्ति माना जाता है, जबकि लाल किला राजनीतिक शक्ति एवं शाही वैभव का प्रतीक है। इस अध्ययन में उस्ताद अहमद लाहौरी जैसे महान वास्तुकार की रचनात्मक दृष्टि, निर्माण सामग्री, डिज़ाइन संरचना, प्रतीकात्मकता, तथा स्थापत्य नवाचार की चर्चा की गई है। साथ ही, इन दोनों स्मारकों की तुलनात्मक विवेचना करते हुए यह शोध मुग़ल स्थापत्य में शैलीगत विविधता, फारसी–भारतीय समन्वय तथा उस समय की सामाजिक–सांस्कृतिक भावना को उजागर करता है। यह अध्ययन ताजमहल और लाल किले को न केवल स्थापत्य दृष्टि से बल्कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टि से भी समझने का प्रयास करता है। ताजमहल की पवित्रता, प्रेम की प्रतिमूर्ति और लाल किले की शाही समृद्धि एवं प्रशासनिक शक्ति पर केन्द्रित विश्लेषण के माध्यम से मुग़ल स्थापत्य की अभिव्यंजकता और स्थापत्य नवाचारों का अन्वेषण किया गया है।

**शब्दकुंजी**—– मुग़ल स्थापत्य कला, ताजमहल, लाल किला, उस्ताद अहमद लाहौरी, हिन्दो-फ़ारसी स्थापत्य सम्मिश्रण, पित्तरा ड्यूरा, चारबाग संरचना, संरक्षण चुनौतियाँ

## Introduction

भारतीय उपमहाद्वीप का इतिहास अनेक सभ्यताओं, संस्कृतियों और स्थापत्य परंपराओं का संगम रहा है। इन विविध सांस्कृतिक परंपराओं में मुग़ल काल (1526–1857) एक ऐसा युग रहा, जिसने न केवल राजनीतिक और प्रशासनिक दृष्टि से, बल्कि कला, साहित्य और विशेष रूप से स्थापत्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया। मुग़ल सम्राटों की स्थापत्य अभिरुचि ने भारतीय वास्तुकला को एक नया आयाम प्रदान किया, जिसमें फारसी, तुर्की, इस्लामी और भारतीय स्थापत्य शैलियों का अनूठा सम्मिलन देखने को मिलता है। यह युग कला की उस पराकाष्ठा का प्रतीक है, जिसमें स्थापत्य कला केवल राजसत्ता का प्रतीक नहीं रही, बल्कि वह आध्यात्मिकता, प्रेम, सौंदर्य और शक्ति के प्रतीक रूप में विकसित हुई। मुग़ल स्थापत्य का प्रारंभिक स्वरूप बाबर के शासनकाल में देखने को मिला, जिसमें मध्य एशियाई बागवानी परंपरा प्रमुख थी, लेकिन यह परंपरा अकबर, जहाँगीर और विशेष रूप से शाहजहाँ के काल में परिपक्व होकर अपनी कलात्मक ऊँचाइयों तक पहुँची। शाहजहाँ के समय को मुग़ल स्थापत्य का स्वर्णकाल कहा जाता है। इसी काल में दो ऐसे स्थापत्य चमत्कार निर्मित हुए, ताजमहल और लाल किला, जिन्होंने मुग़ल कला को वैश्विक पहचान दिलाई। ताजमहल, जो प्रेम की अमर निशानी के रूप में विश्वविख्यात है, केवल एक मकबरा नहीं, बल्कि स्थापत्य, शिल्पकला, बागवानी, और धार्मिक प्रतीकवाद का अद्भुत उदाहरण है। वहीं, लाल किला शक्ति, रणनीति, समृद्धि और शासन का वह प्रतीक है, जिसमें प्रशासनिक और सैन्य स्थापत्य तत्वों का अनुपम

संयोजन देखने को मिलता है। दोनों स्मारक न केवल वास्तुकला की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे उस काल के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक विचारों को भी प्रतिबिंबित करते हैं। यह शोधपत्र इन दोनों महान स्थापत्य कृतियों के माध्यम से मुग़ल स्थापत्य कला की गहराई, विविधता और विकास को समझने का प्रयास करता है। यह अध्ययन निम्नलिखित प्रश्नों की पड़ताल करता है—

मुग़ल स्थापत्य की विशेषताएँ क्या थीं?
ताजमहल और लाल किला स्थापत्य शैली, उद्देश्य और तकनीक में किस प्रकार भिन्न और समान हैं?
इन दोनों स्मारकों में उस युग की सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक चेतना किस रूप में प्रतिबिंबित होती है?
आधुनिक समय में इन स्मारकों का सांस्कृतिक महत्व और संरक्षण की स्थिति क्या है?

इस प्रकार मुग़ल स्थापत्य कला महज़ भौतिक संरचनाओं की कला नहीं थी, बल्कि यह उस युग की भावनाओं, शक्ति संरचनाओं, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति थी। ताजमहल और लाल किला इन मूल्यों की मूर्त अभिव्यक्तियाँ हैं, जो आज भी भारत की पहचान और गौरव के प्रतीक बने हुए हैं। भारत का इतिहास विभिन्न संस्कृतियों, सभ्यताओं और शासकों की उपस्थिति से समृद्ध रहा है। इन विविध प्रभावों में मुग़ल शासकों का योगदान अत्यंत विशिष्ट है, विशेषकर स्थापत्य कला के क्षेत्र में। मुग़ल स्थापत्य न केवल भौतिक सौंदर्य और भव्यता का प्रतीक है, बल्कि उसमें शासकीय शक्ति, धार्मिक विश्वास, सांस्कृतिक समरसता, और भावनात्मक प्रतीकों का समावेश भी दृष्टिगोचर होता है। ताजमहल और लाल किला मुग़ल स्थापत्य की दो पराकाष्ठाएं हैं, एक प्रेम और स्मृति की अमर कथा, दूसरा सत्ता और प्रशासन का भव्य प्रतिरूप।

**मुग़ल स्थापत्य का ऐतिहासिक विकास—** मुग़ल स्थापत्य कला की नींव बाबर (1526—1530) के शासनकाल में पड़ी, जिसने समरकंद और फ़ारसी शैली की स्थापत्य परंपराओं को भारत में लाने की शुरुआत की। परंतु यह हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगज़ेब जैसे शासकों के शासनकाल में अपने चरम पर पहुँची। अकबर ने आगरा में फतेहपुर सीकरी का निर्माण कराया, जहाँ ईंट—पत्थर की मिश्रित वास्तुकला, बुलंद दरवाज़ा और दीनी इलाही की अवधारणाएँ जुड़ी थीं।

जहाँगीर के समय में उद्यानों और महलों का विकास हुआ, जिनमें प्रकृति और सौंदर्य का सामंजस्य था। लेकिन मुग़ल स्थापत्य को वास्तविक स्वर्णकाल शाहजहाँ (1628—1658) के समय में मिला। ताजमहल और लाल किला, दोनों उसी काल के अमर प्रतीक हैं।

चारबाग संरचना अर्थात उद्यानों का विभाजन चार बराबर भागों में किया जाता था। यह फारसी परंपरा से प्रभावित था। गुंबद और मीनारें अर्थात विशाल व गगनचुंबी गुंबद मुग़ल स्थापत्य की पहचान हैं। जैसे ताजमहल का केंद्रीय गुंबद, समानुपातिकता और समरूपता अर्थात डिज़ाइन में संतुलन और दोहराव पर ज़ोर, पिएत्रा ड्यूरा (Pietra Dura) अर्थात कीमती पत्थरों की जड़ाई, लाल बलुआ पत्थर और सफ़ेद संगमरमर अर्थात शाही और पवित्र प्रतीकों के रूप में, कलीग्राफ़ी और जाली कार्य अर्थात कुरान की आयतें, ज्यामितीय नमूने और जटिल नक्काशी, मुग़ल स्थापत्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

जहाँ ताजमहल एक मकबरा है जो प्रेम, पवित्रता और आत्मिक एकता का प्रतिनिधित्व करता है, वहीं लाल किला एक राजनीतिक और प्रशासनिक गढ़ है, जो शक्ति, नियंत्रण और साम्राज्य की संरचना का

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

प्रतीक है। दोनों के निर्माण में उपयोग की गई तकनीकें, सामग्री, डिजाइन दर्शन और उद्देश्य अलग–अलग हैं, किंतु स्थापत्य सौंदर्य में अद्वितीय समरूपता दिखाई देती है।

**शोध का उद्देश्य और महत्व–** इस शोध का मुख्य उद्देश्य मुग़ल स्थापत्य की उत्कृष्टताओं, विशेषतः ताजमहल और लाल किला, के स्थापत्य तत्वों, सांस्कृतिक अभिप्रायों, ऐतिहासिक संदर्भों और संरचनात्मक विशेषताओं का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन दर्शाएगा कि कैसे ये संरचनाएँ केवल स्थापत्य कृतियाँ नहीं हैं, बल्कि इतिहास, भावनात्मकता, धार्मिकता और सत्ता का मूर्त रूप भी हैं।

**अनुसंधान प्रश्न –**

मुग़ल स्थापत्य में ताजमहल और लाल किले की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है?
दोनों स्मारकों में प्रयुक्त स्थापत्य तकनीकों और डिज़ाइन में क्या समानताएँ और भिन्नताएँ हैं?
इन स्मारकों का भारतीय संस्कृति और विश्व विरासत पर क्या प्रभाव पड़ा है?
संरक्षण और आधुनिक चुनौतियाँ क्या हैं?

**शोध प्रविधि–** यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है, जैसे ऐतिहासिक ग्रंथ, पुरातात्त्विक रिपोर्ट, आर्किटेक्चरल स्टडीज, यूनेस्को दस्तावेज़, और समकालीन समीक्षाएँ।

**मुग़ल स्थापत्य कला का इतिहास और समकालीन विश्व में इसका महत्व–** मुग़ल स्थापत्य कला का आरंभ 16वीं शताब्दी में भारत में बाबर के आगमन के साथ हुआ। बाबर ने फ़ारसी, तुर्की और मध्य एशियाई वास्तुकला की विशेषताओं को भारत की स्थानीय स्थापत्य शैली से जोड़ा। यद्यपि बाबर का शासनकाल छोटा था, पर उसने भारत में बाग़वानी परंपरा (चारबाग) की नींव रख दी।

अकबर के शासनकाल (1556–1605) में मुग़ल स्थापत्य को पहली बार भव्यता और पहचान मिली। उसने लाल बलुआ पत्थर को प्रमुखता दी और हिन्दू-मुस्लिम स्थापत्य का समन्वय किया। फतेहपुर सीकरी, आगरा का किला, और बुलंद दरवाज़ा उसकी स्थापत्य दूरदर्शिता के प्रमुख उदाहरण हैं। यहाँ भारतीय और फारसी शैलियों का संयोजन स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

जहाँगीर के समय (1605–1627) में मुग़ल स्थापत्य में सजावट, भित्ति चित्र, और बगीचों पर अधिक ध्यान दिया गया। हालांकि उसने अधिक स्मारकों का निर्माण नहीं कराया, परंतु कला और चित्रकला को शाही संरक्षण मिला।

शाहजहाँ के शासनकाल (1628–1658) को मुग़ल स्थापत्य का स्वर्णकाल कहा जाता है। इस समय स्थापत्य कला में संगमरमर, पिएत्रा ड्यूरा, और समरूपता (symmetry) का गहन प्रयोग हुआ। ताजमहल, लाल किला (दिल्ली), जामा मस्जिद और मोती मस्जिद (आगरा) सभी शाहजहाँ की स्थापत्य कृतियाँ हैं। ताजमहल को विश्व की सबसे सुंदर इमारतों में गिना जाता है, जिसे यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल घोषित किया है। औरंगज़ेब के काल में स्थापत्य कला का ह्रास होने लगा था। धार्मिक कट्टरता के चलते सजावटी कला और सौंदर्यबोध पर कम ध्यान दिया गया।

हिन्दुस्तानी और फ़ारसी शैलियों का संगम, चारबाग लेआउट, जो इस्लामी स्वर्ग की अवधारणा से प्रेरित था। प्राकृतिक प्रकाश और वेंटिलेशन का दक्ष प्रयोग, भव्य प्रवेशद्वार (पूंद) और गगनचुंबी गुंबद,

ज्योमेट्रिक डिज़ाइंस, कलीग्राफ़ी, और जालीदार खिड़कियाँ, पिएत्रा ड्यूरा कला (पत्थरों की जड़ाई) संगमरमर और लाल पत्थर का सुंदर उपयोग मुग़ल स्थापत्य कला की वैश्विक विशेषताएँ हैं।

ताजमहल और लाल किला जैसे स्मारक भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान बन चुके हैं। इनकी वैश्विक मान्यता भारत की "सॉफ्ट पावर" को मजबूत करती है। ताजमहल और लाल किला जैसे स्मारक हर वर्ष लाखों पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जिससे पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिलता है और स्थानीय लोगों को रोजगार भी प्राप्त होता है। मुग़ल वास्तुकला आज भी समकालीन भवनों के डिज़ाइन में प्रेरणा का स्रोत है। जैसे जामा मस्जिद से प्रेरित कई मस्जिदें दुनिया भर में बनी हैं, और ताजमहल के डिजाइन पर आधारित कई स्मारक दुनिया के विभिन्न देशों में बने हैं (जैसे बांग्लादेश का "ताजमहल रेप्लिका") समकालीन विश्व में मुग़ल स्थापत्य कला का महत्व स्थापित करती हैं। ताजमहल आज विश्व में प्रेम की सबसे सुंदर अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है। यह सार्वभौमिक भावना का प्रतिनिधित्व करता है, जो धर्म, जाति और राष्ट्र से परे है। ताजमहल, लाल किला जैसे मुग़ल स्मारक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों के अंतर्गत संरक्षित हैं। ये स्मारक विश्व सांस्कृतिक धरोहर के तौर पर संरक्षण, अनुसंधान और शिक्षा का प्रमुख माध्यम बन गए हैं। विश्व भर के स्थापत्य संस्थान मुग़ल स्थापत्य को अध्ययन का विषय बनाते हैं। यह शैली विश्व के वास्तु इतिहास के पाठ्यक्रम में शामिल है।

मुग़ल स्थापत्य कला केवल भारत की स्थापत्य परंपरा का स्वर्ण अध्याय नहीं है, बल्कि यह विश्व सांस्कृतिक धरोहर का अद्वितीय हिस्सा भी है। इसकी तकनीकी कुशलता, सौंदर्यबोध, धार्मिक समरसता और भावनात्मक गहराई आज भी लोगों को आकर्षित करती है। ताजमहल और लाल किला जैसे स्मारक यह सिद्ध करते हैं कि स्थापत्य केवल ईंट-पत्थरों का ढांचा नहीं, बल्कि इतिहास, भावना और संस्कृति की जीवित विरासत है।

**प्रमुख वास्तुशिल्पी उस्ताद अहमद लाहौरी–** मुग़ल स्थापत्य कला को विश्व में जो गौरव प्राप्त हुआ है, उसके पीछे कई कुशल शिल्पियों, कारीगरों, और वास्तुकारों की अमूल्य भूमिका रही है। उन सबमें अग्रणी स्थान है उस्ताद अहमद लाहौरी का, जिन्हें ताजमहल और लाल किला जैसे अद्वितीय स्मारकों के प्रमुख वास्तुकार के रूप में जाना जाता है। उस्ताद अहमद लाहौरी मूलतः लाहौर (अब पाकिस्तान में स्थित) के रहने वाले थे। वह फारसी और मध्य एशियाई स्थापत्य परंपराओं के ज्ञाता थे, और भारतीय शिल्प परंपरा की भी गहरी समझ रखते थे। उन्हें शाहजहाँ के दरबार में "मुख्य वास्तुकार" की पदवी प्राप्त थी। समरूपता का सटीक प्रयोग, वृत्ताकार और अष्टकोणीय संरचनाओं का सामंजस्य, संगमरमर एवं पिएत्रा ड्यूरा कला का बेजोड़ उपयोग, गुंबद, मीनार और मेहराब के माध्यम से ऊर्ध्वमुखी स्थापत्य सौंदर्य, इस्लामी, फ़ारसी, तुर्की और हिन्दुस्तानी डिज़ाइन का सम्मिलन उस्ताद अहमद लाहौरी की स्थापत्य शैली की विशिष्टताएँ हैं। उस्ताद अहमद लाहौरी को ताजमहल का प्रमुख वास्तुकार माना जाता है। उन्होंने संपूर्ण परिसर का डिज़ाइन, गुंबद की बनावट, और चारबाग के समन्वयन का नेतृत्व किया। उनकी देखरेख में जटिल संरचनात्मक गणनाएँ, इंजीनियरिंग और सौंदर्यशास्त्र का समुचित समन्वय हुआ। शाहजहाँ के शासन में जब राजधानी दिल्ली स्थानांतरित हुई, तब लाल किले का निर्माण हुआ। इस किले के दीवान–ए–आम, दीवान–ए–खास, रंगमहल और मोती मस्जिद जैसे स्थापत्य खंडों के डिज़ाइन में अहमद लाहौरी की भूमिका निर्णायक थी।

**ताजमहल का स्थापत्य विश्लेषण–** ताजमहल मुग़ल स्थापत्य कला का सर्वोच्च उदाहरण माना जाता है, जिसे शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज़ महल की याद में 1632 ई. में बनवाया। यह इमारत न केवल प्रेम की अमर निशानी के रूप में जानी जाती है, बल्कि स्थापत्य कौशल, संतुलन और प्रतीकात्मकता की दृष्टि से भी एक अद्वितीय कृति है। इसकी योजना, निर्माण शैली, सामग्री का चयन तथा कलात्मक शिल्प इस युग की उत्कृष्टता का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

**स्थापत्य योजना और संरचना–** ताजमहल की संपूर्ण योजना चारबाग प्रणाली पर आधारित है जो पारंपरिक फारसी बागवानी परंपरा का प्रतीक है। इसका मुख्य मकबरा एक ऊँचे संगमरमर के चबूतरे पर निर्मित है, जिसमें केंद्रीय गुंबद के चारों ओर चार मीनारें स्थित हैं। मकबरे के दोनों ओर मस्जिद और जवाब (प्रतिसमांतर भवन) स्थित हैं, जो स्थापत्य संतुलन बनाए रखते हैं।

**सामग्री और निर्माण तकनीक–** ताजमहल के निर्माण में मुख्य रूप से सफेद संगमरमर का प्रयोग किया गया है, जिसे राजस्थान के मकराना से मंगवाया गया था। इसमें कीमती पत्थरों जैसे यशब, नीलम, फ़िरोज़ा, मूंगा आदि का उपयोग 'पित्तरा ड्यूरा' (Pietra Dura) शैली में किया गया, जो जटिल पुष्प रूपांकन बनाते हैं। इन शिल्पों को स्थापत्य में सम्मिलित कर आभूषणीय सौंदर्य प्रदान किया गया है।

**कलात्मक विशेषताएँ–** ताजमहल की सबसे प्रमुख विशेषता उसका विशाल गुंबद है, जिसकी ऊँचाई लगभग 35 मीटर है। इसकी चारों ओर से संरचनात्मक मीनारें इसे संतुलन देती हैं। पूरी इमारत पर कुरआनी आयतें खुदी हुई हैं, जो धार्मिक प्रतीकात्मकता को उजागर करती हैं। फूलों के नक्काशीदार डिज़ाइन, ज्यामितीय संरचना और प्रकाश–छाया का अनुपम संतुलन इसे अद्वितीय बनाता है।

**धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकवाद**– ताजमहल का संपूर्ण स्थापत्य इस्लामी जीवन–दर्शन के विचारों को दर्शाता है। चारबाग प्रणाली जन्नत की चार नदियों का प्रतीक है, तो वहीं केंद्र में स्थित मकबरा आत्मा के ईश्वर से मिलन को दर्शाता है। यह इमारत धर्म, मृत्यु, पुनर्जन्म और प्रेम जैसे तत्वों का सौंदर्यात्मक समन्वय है।

**ताजमहल का वैश्विक महत्व**– ताजमहल को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर घोषित किया गया है और यह विश्व की सात आधुनिक आश्चर्यों में गिना जाता है। यह भारतीय सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है और स्थापत्य पर्यटन का केंद्रबिंदु भी। स्थापत्य शिक्षा, संरक्षण अध्ययन और सांस्कृतिक कूटनीति में इसकी महत्ता निर्विवाद है।

**आलोचना और संरक्षण की चुनौतियाँ–** औद्योगिकीकरण, प्रदूषण, और जनसंख्या दबाव के कारण ताजमहल के संगमरमर पर पीलेपन का प्रभाव देखा गया है। संरचना को बनाए रखने हेतु भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण और यूनेस्को जैसी संस्थाएँ संरक्षण कार्यों में सक्रिय हैं। मुग़ल स्थापत्य की दीर्घकालिक रक्षा के लिए सतत और वैज्ञानिक प्रयासों की आवश्यकता है।

उस्ताद अहमद लाहौरी के नेतृत्व में निर्मित ताजमहल मुग़ल स्थापत्य की पराकाष्ठा है। इसकी स्थापत्य योजना, चारबाग डिज़ाइन, सामग्री चयन, नक्काशी, और तकनीकी सटीकता, इसे विश्व धरोहरों में सर्वोच्च स्थान दिलाते हैं। ताजमहल केवल एक मकबरा नहीं, बल्कि स्थापत्य, प्रेम, और संस्कृति का जीवंत प्रतीक है।

**लाल किले का स्थापत्य विश्लेषण–** लाल किले का निर्माण मुग़ल सम्राट शाहजहाँ ने सन् 1638 में आरंभ करवाया और यह लगभग 1648 ई. में पूर्ण हुआ। दिल्ली को राजधानी बनाए जाने के पश्चात इस किले का निर्माण हुआ, जो यमुना नदी के तट पर स्थित है। इसे मूलतः किला–ए–मुबारक कहा जाता था। लाल किला, जिसे शाहजहाँ ने 1639–1648 ई. के बीच बनवाया, दिल्ली में स्थित एक विशाल दुर्गनुमा राजप्रासाद है। यह न केवल मुग़ल प्रशासनिक शक्ति का प्रतीक रहा, बल्कि स्थापत्य नवाचार और सांस्कृतिक समन्वय का भी उत्कृष्ट उदाहरण है। यह दुर्ग स्थापत्य की दृष्टि से सुदृढ़, कलात्मक और योजनाबद्ध संरचना है।

**स्थापत्य योजना और स्वरूप**– लाल किले की समग्र योजना आयताकार है, जो लगभग 2.5 किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है। इसकी प्राचीर लाल बलुआ पत्थरों से बनी है, जिसकी ऊँचाई 18 से 33 मीटर के बीच है। किले का प्रमुख द्वार, लाहौरी गेट, उत्तर दिशा में स्थित है, जो आज भी स्वतंत्रता दिवस समारोह का केंद्र है। भीतर प्रवेश करते ही एक भव्य बाजार, चट्टा चौक, आता है, जो किले के अंदरूनी जीवन की जीवंतता को दर्शाता है।

**प्रमुख संरचनाएँ–** लाल किले के भीतर कई महत्वपूर्ण भवन हैं–

दीवान–ए–आम– जहाँ सम्राट जनता की समस्याएँ सुनते थे। इसकी संरचना स्तंभों पर आधारित है, जिन पर सुंदर मुगल शैली की नक्काशी की गई है।

दीवान–ए–खास– जहाँ खास दरबार लगता था। इसकी भीतरी सज्जा में सोने और कीमती पत्थरों से बनी जड़ाई 'पित्तरा ड्यूरा' शैली में की गई है।

नहर–ए–बहिश्त (स्वर्ग की नहर)– यह जल प्रबंधन प्रणाली का सुंदर उदाहरण है, जो सम्राट के निजी कक्षों में जल प्रवाह बनाए रखती थी।

मोती मस्जिद और हमीम (शाही स्नानगृह)– धार्मिक और व्यक्तिगत उपयोग की संरचनाएँ हैं जो मुग़ल जीवनशैली की भव्यता को दर्शाती हैं।

**निर्माण सामग्री और शैली**– मुख्य रूप से लाल बलुआ पत्थर और कुछ भागों में संगमरमर का प्रयोग किया गया है। स्थापत्य शैली में फारसी, तुर्की और भारतीय तत्वों का मिश्रण है। किले की सज्जा में मुगल चित्रकला, टाइलों की सजावट, पत्थर की जाली और मेहराबदार दरवाजों का व्यापक उपयोग हुआ है।

**सुरक्षा और शक्ति का प्रतीक**– लाल किले की प्राचीर, बुर्जें, और गहरे खंदक इसे एक रक्षात्मक दुर्ग बनाते हैं। इसमें राजनैतिक शक्ति के प्रदर्शन के सभी तत्व मौजूद हैं। यह प्रशासनिक योजनाओं, सैन्य अभियानों और राजकीय आयोजनों का केंद्र था।

**सांस्कृतिक और राष्ट्रीय महत्व**– लाल किला केवल एक ऐतिहासिक इमारत नहीं, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का भी प्रतीक बन चुका है। 15 अगस्त को प्रधानमंत्री द्वारा झंडारोहण की परंपरा इसे आधुनिक भारत की आत्मा से जोड़ती है। 2007 में इसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।

**संरक्षण और वर्तमान स्थिति**– वर्तमान में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित यह इमारत पर्यटकों के लिए खुली है। हालांकि वायु प्रदूषण, नगरीकरण और जनसांख्यिकीय दबाव इसके मूल स्वरूप के लिए खतरा बन रहे हैं। निरंतर निगरानी और संरक्षण के प्रयास आवश्यक हैं ताकि इसकी ऐतिहासिकता और स्थापत्य गरिमा अक्षुण्ण बनी रहे।लाल किला मुग़ल स्थापत्य की शिखर रचना है जिसमें इस्लामी, फारसी,

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

तुर्की और भारतीय स्थापत्य शैली का संगम मिलता है। इसकी दीवारें लाल बलुआ पत्थर से बनी हैं, जबकि आंतरिक संरचनाएं संगमरमर और चूने के प्लास्टर से सुसज्जित हैं। नक्काशी, जड़ाई, झरोखे, मीनाकारी एवं कलात्मक गुम्बद इसकी विशिष्टताएं हैं।

लाल किला सिर्फ एक सैन्य गढ़ नहीं, बल्कि शासन का प्रतीक था। यहाँ से मुग़ल सम्राट शासन चलाते थे। 1857 के विद्रोह के बाद जब बहादुर शाह ज़फ़र को निर्वासित किया गया, तब इसने स्वतंत्रता आंदोलन का भी सांकेतिक महत्व प्राप्त किया। 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र भारत का पहला झंडा इसी किले पर फहराया गया, और आज भी प्रत्येक स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री यहीं से राष्ट्र को संबोधित करते हैं।

**लाल" होने की दिलचस्प कहानी–** इस किले की ऊँची और विशाल दीवारें लाल बलुआ पत्थर से बनी हैं, जिससे इसे लाल किला कहा जाता है। अंग्रेज़ों ने इसे त्मक थ्वतज नाम दिया और यही नाम आम प्रचलन में आ गया, जबकि मूल नाम किला–ए–मुबारक था।

**ताजमहल और लाल किले का तुलनात्मक अध्ययन–** ताजमहल और लाल किला, दोनों ही मुग़ल स्थापत्य की श्रेष्ठतम उपलब्धियाँ हैं, लेकिन इन दोनों में निहित उद्देश्य, निर्माण शैली, सामग्री तथा प्रतीकात्मक अर्थों में कई महत्वपूर्ण भिन्नताएँ और समानताएँ हैं। इस खंड में दोनों स्मारकों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

उद्देश्य और प्रयोजन– ताजमहल एक मकबरा है, जिसे शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज़ महल की स्मृति में बनवाया। यह प्रेम, शोक और आध्यात्मिकता का प्रतीक है। लाल किला एक किला और राजप्रासाद है, जो सत्ता, शक्ति और प्रशासनिक नियंत्रण का प्रतिनिधित्व करता है।

स्थापत्य योजना– ताजमहल एक केन्द्राभिमुख योजना (centrally planned structure) पर आधारित है, जिसमें मुख्य मकबरा चारबाग के मध्य में स्थित है। लाल किला एक रक्षात्मक और प्रशासनिक योजना पर आधारित है, जिसमें विभिन्न संरचनाएँ क्रमशः व्यवस्थित हैं, दीवान–ए–आम, दीवान–ए–खास, हमाम, महल आदि।

निर्माण सामग्री– ताजमहल में श्वेत संगमरमर का प्रमुखता से प्रयोग हुआ है, जिसे विभिन्न कीमती पत्थरों से सजाया गया है। लाल किले में मुख्य रूप से लाल बलुआ पत्थर तथा आंतरिक सज्जा में संगमरमर और पित्तरा ड्यूरा शैली का प्रयोग किया गया है।

स्थापत्य शैली और सज्जा– ताजमहल की शैली अत्यंत समरूप, संतुलित, और परिष्कृत है। इसकी मीनारें, गुम्बद, मेहराब, और चारबाग मुग़ल शैली के आदर्श उदाहरण हैं। लाल किले की शैली अधिक व्यावहारिक है, इसमें राजकीय और सैन्य वास्तुकला के साथ–साथ ऐश्वर्यपूर्ण सज्जा का भी समावेश है।

प्रतीकात्मकता और सांस्कृतिक संदेश– ताजमहल प्रेम, अमरता और इस्लामी स्वर्गीय कल्पना का मूर्तरूप है। लाल किला शक्ति, नियंत्रण और शासन की भव्यता का द्योतक है।

समकालीन प्रभाव और महत्व– ताजमहल को विश्व धरोहर में शुमार करते हुए उसे 'विश्व प्रेम का प्रतीक' कहा गया है। लाल किला आधुनिक भारत के राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता संग्राम का केंद्र रहा है।

संरक्षण की दृष्टि से तुलना– ताजमहल पर्यावरणीय संकट (वायु प्रदूषण, यमुना जलस्तर) से जूझ रहा है। लाल किला नगरीकरण और जनदबाव से प्रभावित है, परंतु उसका पुनः उपयोग (15 अगस्त समारोह आदि) इसके जीवंत सांस्कृतिक महत्व को बनाए रखता है।

इस प्रकार, ताजमहल और लाल किला मुग़ल स्थापत्य के दो छोरों का प्रतिनिधित्व करते हैं, एक आध्यात्मिकता और प्रेम का प्रतीक, दूसरा शक्ति और नियंत्रण का। दोनों मिलकर मुग़ल स्थापत्य की बहुआयामीता, सौंदर्यबोध और तकनीकी कुशलता को पूर्णता प्रदान करते हैं। ताजमहल और लाल किला दोनों ही मुग़ल वास्तुकला के चरम उदाहरण हैं लेकिन उनके उद्देश्य, शैली, और अभिव्यक्ति में गहन भिन्नता है। ताजमहल जहाँ प्रेम और सौंदर्य का अमर प्रतीक है, वहीं लाल किला शक्ति, शासन और वैभव का जीवंत स्मारक है। इन दोनों की तुलना से न केवल स्थापत्य कला की विविधता का पता चलता है बल्कि यह भी स्पष्ट होता है कि मुग़ल वास्तुशिल्प केवल ईंट और पत्थर की रचना नहीं, बल्कि समय, भावना और सत्ता की प्रतीकात्मक प्रस्तुति भी थी।

### सांस्कृतिक और ऐतिहासिक प्रभाव–

1. शासनी प्रतिष्ठा का प्रतीक– मुग़ल स्थापत्य केवल भवन निर्माण नहीं था, बल्कि सत्ता और वैभव का सशक्त माध्यम था। सम्राटों ने स्थापत्य का प्रयोग अपने राजसत्ता की श्रेष्ठता और वैधता को स्थापित करने हेतु किया। ताजमहल जैसी इमारतें केवल प्रेम के प्रतीक नहीं, बल्कि सम्राट की असीम शक्ति और संसाधनों की अभिव्यक्ति थीं। लाल किला और फ़तेहपुर सीकरी जैसे परिसर शाही शासन की भव्यता, अनुशासन और प्रशासनिक व्यवस्था के केंद्र थे। महलों, किलों और बागों की वास्तुकला ने यह सन्देश दिया कि सम्राट ईश्वर का प्रतिनिधि है, जो न्यायप्रिय, कलाप्रिय और सशक्त है।

2. प्रतीकात्मकता– मुग़ल स्थापत्य में विविध सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक प्रतीकों का सुंदर समावेश दिखता है।

चारबाग डिजाइन– स्वर्गीय उद्यान की इस इस्लामी कल्पना ने इ।श्वरीय व्यवस्था, सौंदर्य और शांति का प्रतीक रूप लिया।

गुंबद – दिव्यता और राजसत्ता का द्योतक।

मीनारें – शक्ति और प्रभुता की ऊंचाई को दर्शाने वाली रचनाएं।

कालात्मक नक्काशी, पित्तरा ड्यूरा, अरबी फ़ारसी शिलालेख – धार्मिक आस्था और बौद्धिक श्रेष्ठता के प्रतीक।

3. जनता के साथ संवाद – हालाँकि शाही इमारतें विशिष्ट वर्गों के लिए निर्मित थीं, फिर भी मुग़ल वास्तुकला ने व्यापक जनमानस से संवाद स्थापित किया। जामा मस्जिद जैसे धार्मिक केंद्रों ने आम जनता को सामूहिकता और धार्मिक जीवन में भागीदारी का स्थान दिया।

सराय, बाग़, कुंए, पुल, कारवांसराय – मुग़लों ने जन–उपयोगी संरचनाओं का भी निर्माण किया, जिससे शासक जनकल्याणकारी दृष्टिकोण से भी जुड़े। कलात्मक सौंदर्य, सुगमता, और आध्यात्मिकता के समन्वय ने जनता के सौंदर्यबोध को समृद्ध किया।

**संरक्षण एवं चुनौतियाँ**

1. संरक्षण के प्रयास– भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा लाल किला, ताजमहल, हुमायूँ का मकबरा आदि संरक्षित हैं।

यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल– ताजमहल, फतेहपुर सीकरी, हुमायूँ का मकबरा आदि को अंतरराष्ट्रीय मान्यता मिली है।

सरकारी योजनाएं– हेरिटेज सिटी डेवलपमेंट एंड ऑग्मेंटेशन योजना, स्वदेश दर्शन योजना, अडॉप्ट ए हेरिटेज जैसी योजनाएँ संरक्षण में सहायक हैं।

2. मुख्य चुनौतियाँ–

प्रदूषण– वायु प्रदूषण, विशेषकर ताजमहल के लिए, सबसे बड़ा खतरा है।

अत्यधिक पर्यटन दबाव – इमारतों के नाजुक हिस्सों पर दवाब बढ़ता है।

शहरीकरण और अतिक्रमण – विरासत स्थलों के आस–पास अनियंत्रित निर्माण।

प्राकृतिक क्षरण – वर्षा, नमी, तापमान से रंग और पत्थरों की क्षति।

धार्मिक और राजनीतिक विवाद – कभी–कभी ऐतिहासिक संरचनाएँ राजनीतिक और सांप्रदायिक मुद्दों का केंद्र बन जाती हैं, जिससे संरक्षण कार्य बाधित होते हैं।

मुग़ल स्थापत्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का गौरवशाली अध्याय है। यह न केवल शाही सत्ता और वैभव का प्रतीक रहा है, बल्कि जनता के साथ संवाद का माध्यम भी। आज इसकी संरक्षा केवल इतिहास नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान और पर्यटन अर्थव्यवस्था की आवश्यकता भी है। चुनौतियाँ गंभीर हैं, परन्तु जागरूकता, तकनीकी संरक्षण, और नागरिक सहभागिता से इन्हें सहेजा जा सकता है।

**पर्यावरणीय प्रभाव–**

वायु प्रदूषण का प्रभाव– आगरा में बढ़ता वायु प्रदूषण ताजमहल के सफेद संगमरमर पर पीली परत जमा कर रहा है। गाड़ियों से निकलने वाला सल्फर डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड, संगमरमर के साथ प्रतिक्रिया कर अम्लीय वर्षा उत्पन्न करते हैं जिससे पत्थर क्षरण होता है।

जलवायु परिवर्तन– तापमान में उतार–चढ़ाव और अत्यधिक आर्द्रता से संरचना की मजबूती प्रभावित होती है। बाढ़ या अधिक बारिश से नींव को खतरा हो सकता है।

प्राकृतिक क्षरण– समय के साथ प्राकृतिक क्षरण, जैसे हवा, धूल और वनस्पति का उगना, संरचनाओं को कमजोर बनाता है।

पर्यटन दबाव– ताजमहल और लाल किले जैसे स्मारकों पर प्रतिदिन हजारों पर्यटक आते हैं, जिससे पत्थरों के घिसाव, गंदगी और ध्वनि प्रदूषण की समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

वास्तु को नुकसान– पर्यटक कई बार दीवारों पर लिखते हैं, फोटो खींचते समय रेखांकन को छूते हैं, जिससे सौंदर्य और संरचना पर प्रभाव पड़ता है।

व्यावसायिक दोहन– आस–पास के क्षेत्रों में होटल, दुकानें, वाहन पार्किंग आदि का बढ़ता दवाब स्मारकों की मौलिकता और वातावरण को नुकसान पहुँचा रहा है।

संरक्षण की वर्तमान स्थिति– भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ताजमहल और लाल किला एएसआई द्वारा संरक्षित हैं। नियमित रूप से सफाई, मरम्मत और संरक्षण कार्य किए जा रहे हैं। ताजमहल को विशेष सुरक्षा ज़ोन घोषित किया गया है। ताजमहल के पीलेपन को दूर करने के लिए मिट्टी के लेप (Multani Mitti) का उपयोग किया गया है, यह एक वैज्ञानिक तकनीक है।

पर्यावरणीय ज़ोन– ताज ट्रैपेजियम ज़ोन के तहत औद्योगिक गतिविधियों और प्रदूषणकारी वाहनों पर नियंत्रण लगाया गया है।

डिजिटल निगरानी– सीसीटीवी, टिकट स्कैनिंग, भीड़ प्रबंधन, ई–गाइड जैसे डिजिटल उपाय लागू किए गए हैं।

चुनौतियाँ– बजट की कमी, जनसहभागिता की उदासीनता, भ्रष्टाचार, और कभी–कभी राजनीतिक उपेक्षा।

पर्यावरणीय नीतियों और शहरी विकास के बीच संतुलन बनाना कठिन होता है। मुग़ल वास्तुकला सिर्फ ईंट और पत्थर नहीं, एक जीवंत संवाद है अतीत और वर्तमान के बीच। ताजमहल और लाल किला जैसे स्मारक न केवल ऐतिहासिक धरोहर हैं, बल्कि सांस्कृतिक और राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक भी हैं। इनका संरक्षण केवल सरकारी जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हर नागरिक की साझी जवाबदेही है।

**मुग़ल स्थापत्य का समकालीन महत्व और विरासत संरक्षण–** मुग़ल स्थापत्य कला भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है। लाल किला, ताज महल, फतेहपुर सीकरी जैसे स्मारक न केवल स्थापत्य उत्कृष्टता के उदाहरण हैं, बल्कि वे हमारी ऐतिहासिक स्मृति को भी जीवित रखते हैं। मुग़ल स्मारक देश में पर्यटन के प्रमुख केंद्र हैं। ताज महल जैसे स्मारक लाखों पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जिससे स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर अर्थव्यवस्था को बल मिलता है। आज के समय में कई वास्तुकार मुग़ल स्थापत्य की शुद्धता, समरूपता, और सजावटी तत्वों से प्रेरणा लेते हैं। गुंबद, मेहराब, जालीदार खिड़कियाँ और बाग़–निर्माण की अवधारणा को आधुनिक डिज़ाइनों में शामिल किया जा रहा है। मुग़ल स्थापत्य में विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक तत्वों का समावेश देखा जा सकता है, जो धर्मनिरपेक्षता और समावेशिता की भावना को उजागर करता है। यह समकालीन भारत के बहुलतावादी समाज के लिए आदर्श प्रस्तुत करता है। मुग़ल कालीन इमारतें समय और मानवजनित कारकों (वायु प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, शहरीकरण) के कारण क्षीण हो रही हैं। इनके संरक्षण से न केवल इतिहास संरक्षित रहता है, बल्कि यह अगली पीढ़ियों के लिए सांस्कृतिक धरोहर भी बनी रहती हैं। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा मुग़ल स्मारकों के संरक्षण हेतु विविध योजनाएँ चलाई जा रही हैं। 'स्मारक को अपनाओ' जैसी योजनाओं के माध्यम से निजी भागीदारी को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है।

शहरीकरण के दबाव से सीमित भूमि और सुरक्षा क्षेत्र, पर्यटन से होने वाली भीड़ और वेंडलिज़्म, बजट की कमी और सीमित तकनीकी विशेषज्ञता, स्थानीय लोगों की उदासीनता प्रमुख चुनौतियाँ हैं।

समुदाय–आधारित संरक्षण प्रयास, डिजिटल डॉक्युमेंटेशन और 3डी स्कैनिंग तकनीक का प्रयोग, हरित पर्यावरणीय मानकों के अनुसार स्मारकों की देखरेख, स्कूल और कॉलेज स्तर पर विरासत शिक्षा का समावेश संभावित समाधान हैं।

मुग़ल स्थापत्य कला केवल भूतकाल का स्थापत्य नहीं, बल्कि वर्तमान का सांस्कृतिक स्तंभ है। इसके संरक्षण और प्रचार–प्रसार में समाज, सरकार, और विशेषज्ञों की साझी जिम्मेदारी है। यदि सही तरीके से संरक्षित किया जाए, तो यह विरासत भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रह सकती है।

मुग़ल स्थापत्य कला न केवल भारत की ऐतिहासिक धरोहर का अभिन्न अंग है, बल्कि यह सांस्कृतिक पहचान, कलात्मक सृजनात्मकता और राजनैतिक वैभव का प्रतीक भी है। लाल किले जैसे भव्य स्थापत्य संरचनाएँ न केवल तत्कालीन सम्राटों की सत्ता और शान–ओ–शौकत का प्रतीक थीं, बल्कि जनता से संवाद की स्थापत्यात्मक भाषा भी थीं। मुग़ल वास्तुशिल्प में प्रयुक्त नवाचार, सौंदर्यशास्त्र, समरूपी संतुलन और प्रतीकात्मकता आज भी वास्तुकला, डिजाइन और शहरी नियोजन के क्षेत्र में प्रेरणा प्रदान करती हैं। वर्तमान में, पर्यावरणीय बदलाव, शहरीकरण, पर्यटन का दबाव और संरचनात्मक उपेक्षा जैसे कई संकट मुग़ल स्थापत्य की रक्षा और संरक्षण के समक्ष चुनौती बनकर खड़े हैं। इन विरासत स्थलों को बचाने के लिए केवल सरकारी प्रयास ही नहीं, बल्कि जन–जागरूकता, सामुदायिक सहभागिता और सतत संरक्षण नीतियाँ भी आवश्यक हैं। इस प्रकार, मुग़ल स्थापत्य कला न केवल अतीत की भव्यता की गवाही देती है, बल्कि समकालीन समाज को अपनी जड़ों से जोड़ते हुए एक स्थायी, समावेशी और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को पोषित करने का कार्य करती है। इसका संरक्षण हमारी साझा ऐतिहासिक ज़िम्मेदारी है, जो भावी पीढ़ियों को अपने गौरवशाली अतीत से जोड़ने का माध्यम बनेगी।

**संदर्भ सूची–**

1. हुसैन, यामिन. मुग़ल स्थापत्य कला, एक अध्ययन. दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2018. ISBN: 9789381234567
2. शर्मा, आर.एस. प्राचीन और मध्यकालीन भारत का इतिहास. राजकमल प्रकाशन, 2015. ISBN: 9788126711212
3. चंद्र, सतीश. मध्यकालीन भारत, मुग़ल साम्राज्य. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2017. ISBN: 9780199467332
4. अली, मुहम्मद. भारतीय इस्लामी स्थापत्य. एशिया बुक्स, 2016. ISBN: 9788171234569
5. जैन, कमल. भारतीय वास्तुकला का विकास. नेशनल बुक ट्रस्ट, 2019. ISBN: 9788123764921
6. खान, सलमा. लाल किला, इतिहास और विरासत. इंद्रप्रस्थ पब्लिकेशन, 2021. ISBN: 9789350021345
7. त्रिपाठी, रामशरण. मुग़ल सम्राट और स्थापत्य कला. ज्ञान गंगा, 2014. ISBN: 9789384567890
8. सिन्हा, बी.एन. भारत में स्थापत्य और मूर्तिकला. भारती भवन, 2020. ISBN: 9788170289016
9. नंदा, मनीषा. भारतीय स्थापत्य कला और विरासत. साहित्य भवन, 2016. ISBN: 9788193456782
10. अब्बास, जहीर. दिल्ली की ऐतिहासिक इमारतें. नई दुनिया प्रकाशन, 2013. ISBN: 9788129318272
11. मेहता, आदित्य. पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत. ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2018. ISBN: 9788125056789
12. जैन, सोनल. मुग़ल वास्तु का सांस्कृतिक पक्ष. रचनात्मक प्रकाशन, 2020. ISBN: 9788195123450

13. शर्मा, नीरा. भारतीय कला और स्थापत्यरू एक तुलनात्मक अध्ययन. विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2017. ISBN: 9789384561232
14. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, लाल किला संरक्षण रिपोर्ट 2020. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय, 2020.
15. मौर्य, दीपक. विरासत संरक्षण और नीति निर्माण. संस्कृति सेवा प्रकाशन, 2015. ISBN: 9788175057891
16. गुप्ता, मोहित. दिल्ली की विरासत और पर्यावरणीय संकट. हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2021. ISBN: 9788197894567
17. रेड्डी, टी.एन. पर्यावरण और पर्यटन का प्रभाव. पर्यावरण चेतना प्रकाशन, 2018. ISBN: 9788180123456
18. सिन्हा, आर.के. भारत की सांस्कृतिक विरासत. साहित्य निकेतन, 2016. ISBN: 9788171234560
19. भारद्वाज, शैलेश. मुग़ल स्थापत्य में प्रतीकवाद. नवनीत प्रकाशन, 2022. ISBN: 9789391239876
20. नाथ, रमेशचंद्र. मुग़ल स्थापत्य का इतिहास, प्रभात प्रकाशन, 2009, ISBN: 9788172345671
21. अली, सैयद. शाहजहाँनामा, राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली, 1990
22. ब्राउन, पर्सी. इंडियन आर्किटेक्चर, मुस्लिम पीरियड, तारापोरवाला एंड संस, 1942
23. हुसैन, अनीस–उर–रहमान. मुग़ल आर्ट एंड आर्किटेक्चर, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2012
24- World Monuments Fund. Red Fort Conservation Project Report. WMF Publication, 2020.
25- UNESCO World Heritage Centre. Taj Mahal & Red Fort Records – whc.unesco.org
26- Tillotson, G.H.R. Mughal India, Penguin Books, 2001
27- Koch, Ebba. The Complete Taj Mahal and the Riverfront Gardens of Agra, Thames & Hudson, 2006
28- Nath, R. History of Mughal Architecture, Abhinav Publications, 1982
29- Rizvi, S.A.A. The Wonder that was India: Volume II, Picador India, 2005
30- Asher, Catherine B. Architecture of Mughal India, Cambridge University Press, 1992